मीठी शहद की कहानी, मधुमक्खी पालक नरेन्द्र मालव की जुबानी

मैं नरेन्द्र मालव पुत्र श्री कालू लाल मालव ग्राम डंगावद पंचायत समिति सुल्तानपुर, जिला कोटा का निवासी हूँ। हमारा पुश्तेनी धंधा खेती बाडी थी। इससे हमारे परिवार का गुजर बसर नहीं हो पाता था। खेती की आमदनी कम होने के कारण गाँव के सभी लोग चाहते थे कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सरकारी नौकरी एवं अन्य व्यावसाय में जाये ताकि गाँव में समृद्धि आ सके। एक दिन जब मैं सो कर उठा तो देखा कि पूरे गाँव में कोतूहल सा मचा हुआ था। खेतों में सब तरफ लकडी के बक्से रखे हुऐ थे जिनमें से मक्खियां निकल रही थी। मेने गाँव वालों से पूछा तो पता चला कि कुछ लोग बाहर से हमारे गाँव में आकर सरसों के खेतों के समीप मधुमक्खी पालन का कार्य कर रहे है। मुझे यह जानकर बढा आश्चर्य हुआ कि मधुमक्खी पालन भी किया जाता है। पहले तो मुझे मक्ख्यिों के काटने का डर लगा लेकिन जब मेने उन लोगों को बक्से खोलते–बन्द करते एवं शहद निकालते देखा तो मेरा मनोबल बढा और में उन मधुमक्खी पालकों के पास गया। उनसे इस उद्यम के बारे में पूछा तो पता चला कि मधुमक्खी पालन भी एक आय का जरिया हो सकता है। मेने जब उनसे इस कार्य की पूर्ण जानकारी ली तो पता चला कि बहुत कम लागत–मेहनत से अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। मेने सोचा कि जब बाहर के लोग यहां आकर कमा सकते हैं तो मैं यह क्यों नहीं कर सकता। मेने इस हेतु उद्यान विभाग के कार्यालय में सम्पर्क किया इसके चलते वर्ष 2003 से मैं कृषि पर्यवेक्षक के माध्यम से उद्यान विभाग के सम्पर्क में आया तब मुझे पता चला कि बागवानी मिशन के तहत मधुमक्खी पालन करने हेतु अनुदान भी दिया जाता है।

मधुमक्खी पालन करने हेतु मेने उद्यान विभाग में कई प्रशिक्षणों में भाग लिया। इससे मेरा उत्साह एवं रूझान और अधिक बढ गया था। मेने भी मधुमक्खी पालन का कार्य करने की ठा़न ली। वर्ष 2004 में मेने 5 बक्सों से यह उद्यम शूरू किया, जिनसे पहले ही साल में करीब 80 किलो शहद निकाला था। इस कार्य में मेरे बढे भाई महेन्द्र कुमार मालव ने कन्धे कन्धा मिलाकर मेरा सहयोग किया, और सरसों की फसल में उसे रखा। वर्ष 2005 में उद्यान विभाग से बागवानी मिशन के तहत 140 बक्से अनुदान पर लिये जिनसे करीब 30 क्विंटल शहद निकाला, जिसकी बिक्री से 1.25 लाख की आमदनी हुई। उस वक्त पंजाब की कम्पनी द्वारा कार्य स्थल से शहद खरीदकर ले गयी थी। पहली बार 2009 में झालावाड़ जिले में सन्तरों की बगीचों में भी बी–बॉक्स परपरागण के लिये रखे थे मधुमक्खी पालन से वर्ष 2009 में मुझे करीब 8.00 लाख रूपये की आमदनी हुई। मेने स्वयं के स्तर से एवं परिवार के सहयोग से मधुमक्खी कॉलोनी को बढाकर इतना सुदृढ कर लिया कि वर्ष 2008–09 में मधुमक्खी प्रजनन (बी–ब्रीडर) बन गये व अन्य कृषकों को मधुमक्खी कॉलोनी व बक्से सप्लाई करने लगे।

वर्ष 2007 में स्वतंत्रा दिवस एवं वर्ष 2010 में गणतंत्र दिवस समारोह में श्रीमान् जिला कलक्टर महोदय द्वारा जिला स्तर पर मधुमक्खी पालन में **उत्कृष्ठ एवं सराहनीय** कार्य करने हेतु सम्मानित किया गया। आत्मा, कोटा द्वारा आयोजित जिला स्तरीय कृषि मेला 2008 एवं प्रदर्शनी 2009 एवं 2010 में शहद प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। मेने **व्याख्यता** के रूप में महिला उद्योग प्रशिक्षण समिति द्वारा अभ्यारण उत्पाद कलस्टर बांरा में मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण वर्ष 2008 में 60 दिवसों तक मधुमक्खी पालन करने वाले इच्छुक कृषकों को प्रदान किया।

माननीय मुख्यमंत्री द्वारा मार्च 2010 में जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय कृषक सम्मान समारोह में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि अर्जित करने हेतु सम्मानित किया एवं पुरूस्कार के रूप में 25000 रूपये की राशि प्रदान की गई। कृषि विज्ञान केन्द्र, बोरखेड़ा कोटा द्वारा आयोजित कृषि तकनीकी सप्ताह 2010 में **''उद्यमिता विकास (मधुमक्खी पालन)''** आयोजित प्रगतिशील कृषक प्रतियोगिता में **प्रथम** स्थान प्राप्त किया एवं वर्ष 2012 में **वैज्ञानिकी सलाहकार समिति में कृषक सदस्य** के रूप में मनोनीत किया गया। वर्ष 2012 में **कल्याण सहाय शर्मा स्मृति श्रेष्ठ पुरूस्कार ''हलधर रत्न 2012''** देकर माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। इसी वर्ष केन्द्रीय मृदा एवं जल सरक्षण अनुसधान एवं प्रशिक्षण संस्थान अनुसंधान केन्द्र कोटा द्वारा सम्मानित किया गया। मधुमक्खी पालन हेतु मेने वर्ष 2013 में **नेशलन बी–बोर्ड, दिल्ली में पंजीकरण** भी करवा रखा है। **महिन्द्रा समृद्धि इण्डिया एग्री अवार्डस 2014** कृषि समर्थ सम्मान अवार्ड प्राप्त कर 51000 रूपये की राशि प्राप्त की।

उद्यान विभाग द्वारा **उद्यानिकी सखा** के रूप में मान्यता दी गई है। भविष्य में विभागीय ग्रीन कार्ड की प्राथमिकता दी जायेगी। उपनिदेशक कृषि (विस्तार) द्वारा दिनांक 13.08.2015 को विशेष कृषक परिचय पत्र भी प्रदान किया गया है।

वर्तमान में मेरे एवं परिवार के सदस्यों के पास कुल **500 मधुमक्खी के बक्से** है जिनसे लगभग 150 क्विटंल शहद का उत्पादन होता है और इनसे लगभग 10.00 लाख रूपये प्रतिवर्ष की आय हो जाती है। मुझे देखकर मेरे व आस–पास गाँव के कई कृषक एवं बेरोजगार युवा प्रोत्साहित हुऐ एवं उनका रूझान मधुमक्खी पालन की और बढा है। इसमें लगभग 400–500 लोग उद्यान विभाग के सम्पर्क में आकर राष्ट्रीय बागवानी मिशन से जुड़कर मधुमक्खी पालन का कार्य कर रहे है। मधुमक्खी पालन से हमारे गाँव व पंचायत समिति सांगोद की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

वर्ष 2011 में मालव मधु उद्योग (कोटा शहद) के नाम से लघु उद्योग के रूप में संचालित किया जा रहा है जिसमें शुद्ध प्राकृतिक शहद की बिक्री की जा रही है। मधुमक्खी पालन उद्योग से जुडे समस्त
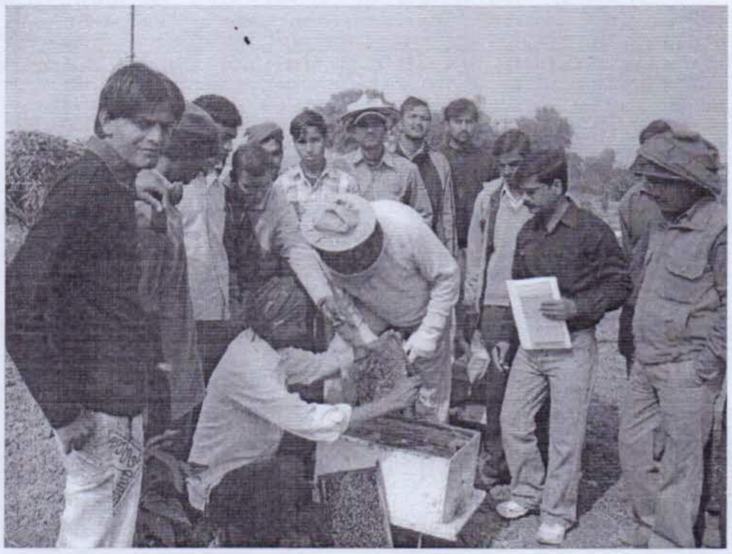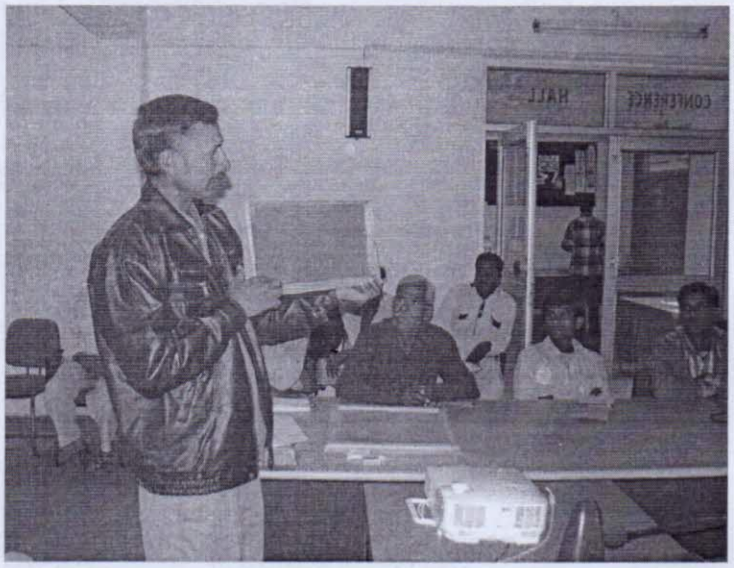
मधुमक्खी पालकों को एकत्रित कर एफ.पी.ओ. बनाने का कार्य जारी है। जिससे कि इस व्यवसाय से उत्पन्न शहद की प्रोसेसिगं एवं मूल्य संवर्धन कर विक्रय किया जा सके जिससे की मधुमक्खी पालकों को अधिक आमदनी प्राप्त हो सकें।